6. अकाल और उसके बाद

PART - 1 (कई दिनों तक ------------- हालत रही शिकस्त)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. पास - समीप	2. दिन - दिवस	3. उदास - दुख
4. भीत - दीवार	5. अवस्था / स्थिति - हालत	6. शिकस्त - पराजय / टूट फूट

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. गश्त लगाना – इधर–उधर चलना

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कवितांश में किस हालत का चित्रण है ?

अकाल की भीषणता का

2. चूल्हा रोने का कारण क्या हो सकता है ?

न जलाना

3. चूल्हा क्यों रोया ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं होने से खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता । इसलिए अपनी निर्जीव हालत पर वह रोया ।

4.‘ चक्की रही उदास ’– से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं होने से पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता । इसलिए अपनी निर्जीव हालत कारण चक्की दुखी रही ।

5. कानी कुतिया किनके पास सोई पडी थी ?

चूल्हा और चक्की के पास

6. कानी कुतिया कहाँ सोई हुई थी ? क्यों ?

कानी कुतिया उदास होकर चूल्हा और चक्की के पास सोई हुई थी । क्योंकि उसे कहीं से खाने को कुछ मिलने की संभावना नहीं थी ।

7. छिपकलियाँ कहाँ गश्त लगा रही हैं ?

भीत पर

8. छिपकलियाँ भीत पर गश्त क्यों लगा रही थीं ?

अकाल के कारण घर की हालत इतनी बुरी थी कि किसीकेलिए खाना नहीं था । इसलिए कीडों को न मिलने से यानी भूख से परेशान होकर छिपकलियाँ दीवार पर इधर–उधर चलती थीं ।

9. कई दिनों तक किसकी हालत शिकस्त रही ?

चूहों की

10. अकाल में चूहों की क्या हालत हो गई ?

भोजन न मिलने से अकाल में चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय बन गयी ।

11.‘ चूहों की भी रही शिकस्त ’- इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ?

अकाल के कारण घर में खाना नहीं है ।

12.‘ चूल्हे का रोना ’ और ‘ चक्की का उदास होना ’– इसका मतलब क्या है ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं था । इसलिए खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता । इस कारण दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही ।

13. कवितांश का आशय

हिंदी के मशहूर कवि नागार्जुन ने अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल की भीषणता का वर्णन किया है । कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर का बारीक चित्रण है ।

अकाल के प्रभाव से घर में कुछ भी अनाज नहीं था । इस कारण कई दिनों तक खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता । इसलिए दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही । कानी कुतिया पिछले कुछ दिनों से खाना न मिलने की निराशा से चूल्हा और चक्की के पास सोई थी । भूख मिटाने केलिए कुछ मिलने की तलाश में छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर घूम रही थीं । भोजन न मिलने से चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय थी । क्योंकि घर में खाना बनने पर ही उन्हें भी खाने केलिए कुछ मिलता है । अकाल का असर केवल मनुष्यों को ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है ।

कवि नागार्जुन ने एक भी मानव पात्र को प्रस्तुत न करके अन्य जीव-जंतुओं और निर्जीव पदार्थों के ज़रिए घर की बुरी हालत का चित्रण अच्छी तरह किया है । कविता में अकाल ग्रस्त घर के माहौल को प्रस्तुत करने में कवि सफल हुए हैं । सरल भाषा में लिखी यह कविता बिलकुल अच्छी और प्रासंगिक है ।

14. टिप्पणी – अकाल का चित्रण

हिंदी के मशहूर कवि नागार्जुन ने आकाल और उसकेबाद कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर का बारीक चित्रण किया है। अकाल के प्रभाव से घर में कुछ भी अनाज नहीं था। इस कारण कई दिनों तक खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। इसलिए दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही। पिछले कुछ दिनों से चूल्हे जलने और चक्की के चलने की प्रतीक्षा में पडी कानी कुतिया अंत में उनके पास ही सो गई। घर की गरीबी के कारण दीया नहीं जलाता, कीडे नहीं आते। इस कारण भूख मिटाने केलिए कुछ मिलने की तलाश में छिपकलियाँ दीवारों पर इधर-उधर घूम रही थीं। चूहों को खाने केलिए कुछ नहीं मिला था। इसलिए उनकी हालत भी अत्यंत दयनीय थी। अकाल का असर केवल मनुष्यों को ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है। एक भी मानव पात्रको ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है। एक भी मानव पात्र को प्रस्तुत न करके अन्य जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं के ज़रिए घर की बुरी हालत यानी अकाल की भीषणता का चित्रण कवि ने आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है।

15. टिप्पणी – अकाल के कारण

जब किसी प्रदेश में सामान्य से कम या बहुत कम वर्षा होती है तो उस प्रदेश में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अकाल एक प्राकृतिक आपदा है। लेकिन प्रकृति पर मनुष्य के स्वार्थपूर्ण हस्तक्षेप भी इसका मूल कारण है। वनों की कटाई और प्रकृति के साथ अनावश्यक छेड-छाड का यह परिणाम है कि कहीं अकाल तो कहीं बाढ की परिस्थिति उत्पन्न होती रहती है। वृक्षों का अंधाधुंध कटाई,अनियंत्रित रेत खनन,कृषिभूमि की सतही,मिट्टी खोदना,वैज्ञानिक साधनों का अधिकाधिक उपयोग,कारखानों के अवशेष नदी में डालना,जंगली जानवरों का अनधिकृत शिकार ऐसे शोषणों का उदाहरण है। सरल रूप में प्रकृति के अनुकूल जीवन बिताना हमारे उपयोग आसक्ति को स्वीकार नहीं था। यही अकाल का मुख्य कारण है। हमारे पूर्वज दोहन पर नहीं पोषण पर बल देते थे।

16. टिप्पणी – अकाल की परेशानियाँ

अकाल बहुत दुखदायक है। इस अभावयुक्त हालत में चारों ओर विषाद और निराशा छा जाती है। पाठभाग में भी हम यह देख सकते हैं। देश में अकाल फैलने के कारण घर की हालत बहुत बुरी थी। कई दिनों तक चूल्हा रोया। चूल्हे में रखकर पकाने केलिए कोई दाना घर में नहीं था। चक्की भी उदास रही। चक्की में डालकर पीसने केलिए अनाज घर में नहीं था। खाने की प्रतीक्षा में चक्की और चूल्हे के पास पडी हुई कानी कुतिया सो गयी। दीवार पर छिपकलियों की गश्त लगी रही, दीपक हो तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ? चूहों की हालत भी शिकस्त रही। घर के अंदर ही नहीं बाहर खेतों में भी अनाज नहीं था। अकाल मनुष्य के साथ-साथ पशु-पक्षियों को भी भूखमरी का शिकार बना देता है। अकाल भोजन की समस्या, भूख-प्यास की परेशानी तथा कई बीमारियाँ फैलने का कारण भी बनता है। अकाल की परेशानियों से बचने का उचित उपाय हमें खुद ढूँढना है ताकि हम सुख भरा जीवन बिता सके।

17. लेख – जल संरक्षण

जल प्रकृति का वरदान है। जल के बिना धरती में जीना मुश्किल बन जाता है। समय-समय पर बरसात के ज़रिए तथा नदी, तालाब, नाले, झरने, समुद्र, कुएँ आदि से प्रकृति हमें आवश्यक जल देता रहा। पीने,नहाने,सफाई करने,निर्माण कार्य,खेती,खाना पकाने,कारखानों केलिए,बिजली के उत्पादन आदि केलिए हम जल का इस्तेमाल करते हैं। जल की आवश्यकता दिन-ब-दिन बढती जा रही है। लेकिन यह समझे बिना हम बडी मात्रा में जल का दुरुपयोग करते हैं तथा जलस्रोतों का नाश कर रहे हैं। जल आज हमारेलिए कीमती चीज़ बनती जा रही है, मोल देकर पानी खरीदना पडता है। जल नहीं है तो मनुष्य तथा अन्य जीव-जंतुओं का जीवन खतरे में पड जाएगा। इस भयंकर समस्या से बचने केलिए वर्षा से मिल रहे पानी को संजोके रखना चाहिए। जंगल-पेडों की कटाई रोककर अधिकाधिक पेड लगाना चाहिए, पहाडियों को गिराना और खेतों को मिटाना बंद करना चाहिए। जल संरक्षण केलिए उचित व्यवस्था करें तो आनेवाले दिनों में हमारेलिए प्रयास नहीं करना पडेगा। हमारेलिए और आगामी पीढी केलिए जल संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है।

18. पोस्टर (संदेश) points – जल संरक्षण

जल संरक्षण

1. जल प्रकृति का अमूल्य वरदान...
   सभी का अस्तित्व जल पर निर्भर।

2. जल जीवामृत है...
   जल नहीं है तो कल नहीं।

3 जल का दुरुपयोग मत करो...
   जल का उपयोग सावधानी से।

4. जलस्रोतों को प्रदूषित मत करो...
   शुद्ध जल स्वस्थ जीवन का आधार।

5 पहाडियों को गिराना,जंगल-पेडों की कटाई,
   जलस्रोतों व खेतों को मिटाना आदि बंद करो...
   जल की किल्लत से रक्षा पाओ।

6. जल को संजोके रखो...
   हमारेलिए... आगामी पीढी केलिए...।

7 भूमिगत जल शोषण पर रोक लगाएँ...
   पेयजल केलिए संभाव्य लडाई से बच दें।

8. बारिश के पानी को बेकार बहने न दें...
   पानी को धरती में उतरने दो।

विश्व जल दिवस – मार्च 22

19. पोस्टर (points)संदेश – अकालग्रस्त लोगों को सहायता पहुँचाना

1. अकाल में पडे लोग भी इंसान हैं, इनकी मदद करें ।
2. अकाल ग्रस्त प्रदेशों के लोगों को खाना और कपडा पहुँचाएँ ...
   * व्यक्तिगत स्तर पर
   * विद्यालय या कार्यालय स्तर पर
   * अपने समाज में सम्मिलित रहकर
3. अपनी क्षमता के अनुसार कुछ करें
   समाज केलिए अपनी प्रतिबद्धता दर्शाएँ ।

विश्व गरीबी दिवस – जुलाई 28

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45

PART - 2 (दाने आए ------------- कई दिनों के बाद)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. दाना - अनाज 2. अंदर - भीतर 3. पाँख - पंख, पर 4. कौआ - काक

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. आँखें चमक उठीं – घर के सभी संतुष्ट हो गए

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कवितांश में किस हालत का चित्रण है ?

अकाल के बाद की खुशहाली

2.‘ चमक उठीं घर भर की आँखें ’– इसका मतलब क्या है ?

अकाल के दिन बीत जाने पर कई दिनों के बाद घर में अनाज आने से खाना पकाया गया । इसलिए घर के अंदर के चूल्हा, चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं ।

3.‘ धुआँ उठा आँगन से ऊपर ’– इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ?

अकाल दूर होने से कई दिनों के बाद घर में दाने आए। इससे चूल्हा जलाने लगा, आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा । घर में रहनेवाले सभी जीवों की आँखें खुशी से चमकने लगीं । क्योंकि आज उनको खाना मिलनेवाला है ।

4. कौआ अपनी पाँखें खुजलाने का कारण क्या है ?

अकाल के बाद घर में खाना पकाया गया । इसलिए घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौआ अपनी पाँखें खुजलाया होगा ।

4.‘ घर भर की आँखें ’– कवि के अनुसार यहाँ घर के सदस्य कौन–कौन हैं ?

चूल्हा, चक्की, कानी कुतिया, छिपकली, चूहा और कौआ ।

5. कविता में किन-किन निर्जीव वस्तुओं के बारे में बताया गया है ?

चूल्हा, चक्की

6. कविता में किन-किन जीव-जंतुओं के ज़िक्र हैं ?

कानी कुतिया, छिपकली, चूहा और कौआ

4. कवितांश का आशय

अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में कवि नागार्जुन ने अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन किया है ।

अकाल के दिन बीत जाने से घर की हालत एकदम बदल गयी । घर में कई दिनों के बाद दाने अए । घरवालों ने चूल्हा जलाया और आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा । घर के अंदर के चूल्हा,चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं । घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं । अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ सभी जीव-जंतु संतुष्ट हो जाते हैं ।

यहाँ कई दिनों के बाद फिर सबके मन में आई खुशी का,घर की बदली हालत का वर्णन सरल शब्दों में किया है । अकाल के बाद की खुशहाली की ओर सबका ध्यान आकर्षित करनेवाली यह कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है ।

5. टिप्पणी – अकाल के बाद का चित्रण

हिंदी के मशहूर कवि नागार्जुन ने आकाल और उसकेबाद कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर के अकाल के बाद की हालत का बारीक चित्रण किया है । अकाल के समय में जो दयनीय अवस्था थी, अकाल के बाद वह बदल गई । अकाल के बाद घर के भीतर दाना आने पर मनुष्य ही नहीं, सभी जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं में खुशी का अनुभव होने लगा । दाना मिलने पर खाना पकाने केलिए चूल्हा जलाया गया । उस समय बहुत दिनों के बाद घर के आँगन से ऊँपर धुआँ उठता हुआ दिखाई देता है । घर के अंदर के चूल्हा, चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव-जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं । घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं । अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ-साथ सभी जीव-जंतु भी संतुष्ट हो जाते हैं । अकाल के समय धीरे-धीरे बदलने पर मनुष्य के जीवन में सुख भरे दिन वापस आते हैं और पुन: अपनी संप्पन्नता को प्राप्त कर लेती है । प्रकृति भी पुन: अपने स्वरूप को प्राप्त करती है और समस्त प्राणी चैन की साँस लेते हैं । यहाँ प्रकृति की बदली हालत यानी अकाल के बाद की खुशहाली का चित्रण कवि ने आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

6. पोस्टर (संदेश) points – खेती का संरक्षण

खेती का संरक्षण

1 खेती पर हमारा जीवन निर्भर...
खेती नहीं तो हम नहीं ।

2 खेती और किसान को प्रोत्साहन दें...
किसान हमारे अन्नदाता हैं ।

3 अच्छे बीज,खाद,आर्थिक सहायता आदि से किसानों की सहायता करें...
खेती को बढावा दें,खेती का विकास करें ।

4 खेती नहीं तो खाना नहीं...
खाना जीवों की अभूतभूत आवश्यकता है ।

5 भारत एक कृषिप्रधान देश है...
किसानों की उन्नति के बिना देश की उन्नति नहीं होती ।

देशीय किसान दिवस – दिसंबर 23

7. लेख – खेती का महत्व

खेती नहीं तो खाना नहीं । खाना जीवों की आधारभूत आवश्यकता है । भोजन के बिना जीवों को जीवित रह न सकते । संसार का अन्नदाता किसान तपती हुई धूप,कठिन सर्दी और भारी वर्षा में कठिन परिश्रम करके अनाज उत्पन्न करते हैं । देश की उन्नति तथा उसके समग्र विकास में खेती का स्थान उत्यंत महत्वपूर्ण है । भारत कृषि प्रधान देश है । कृषि के माध्यम से खाद्य उत्पन्न होता है । आज कई कारणों से खेती कम होती जा रही है । इसलिए किसानों का आदर करके खेती को बढावा देना चाहिए ।

8. लेख - भोजन का दुर्व्यय

आज हमारे देश में भोजन की बर्बादी एक भीषण समस्या बनती जा रही है । कोई जानबूझकर ऐसा करता है तो कोई ना समझी में करता है । देश में कई लोग दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं पाता है । कई लोग भोजन की कमी की वजह से मारे जाते हैं । भोजन की बर्बादी कई शादी कई शादी समारोह,कार्यक्रमों के अवसर पर भी होती है । दरअसल शादी समारोह में लोग ज़्यादा भोजन ले लेते हैं और यूँ ही थाली में छोड देते हैं । हमें अधिक भोजन को गरीबों,भिखारियों में बाँटना चाहिए । शादी एवं अन्य समारोह में मेहमानों को ज़रूरत पडने पर ही भोजन दें । सभी को इसके प्रति जागरूक होना चाहिए और भोजन की बर्बादी को रोककर देस की विकास में भागीदार बनना चाहिए । हमें यह समझना चाहिए कि भोजन हम सभी केलिए काफी महत्वपूर्ण हैं,यदि हम इसी तरह से भोजन बर्बादी करेंगे तो आनेवाले समय में हमारे साथ भी ज़रूर ही बुरा होगा । यह भी हम ध्यान देना चाहिए कि कर्षक बहुत कष्ट सहकर ही हमारेलिए दान, फल और सब्जियाँ पैदा कर देते हैं । इसलिए हम अधिक फल, सब्जियाँ न खरीदें, जिनका हम जितना उपयोग कर सकें उतनी ही सब्जियों को खरीदें । समाज तथा देश की विकास केलिए भोजन का उपयोग सही ढंग से करना चाहिए ।

9. टिप्पणी – कविता की प्रासंगिकता पर

नागार्जुन द्वारा रचित प्रस्तुत कविता ' अकाल और उसके बाद ' प्रत्येक काल केलिए प्रासंगिक है । अकाल एक ऐसी प्राकृतिक आपता है जो किसी भी काल और किसी भी स्थान पर अपने पैर पसार सकती है । अकाल उस स्थान पर निवास करनेवाले मनुष्य ही नहीं, समस्त प्राणी और वहाँ की प्रकृति को बुरी तरह प्रबावित करता है । अकाल के कारण समस्त खाद्य पदार्थ नष्ट हो जाते हैं । लेकिन मनुष्य इस परिस्थिति से उबरने का प्रयास करता है । इसकेलिए दूसरे मनुष्यों का भी सहयोग लेता है । धीरे-धीरे समय बदलता है । उसके जीवन में सुख-भरे दिन वापस आते हैं और वह पुन: अपनी संपन्नता को प्राप्त कर लेता है । प्रकृति भी पुन: अपने स्वरूप को प्राप्त करती है और समस्त प्राणी चैन से साँस लेते हैं ।

10. टिप्पणी - कविता में कई दिनों तक और कई दिनों के बाद दुहराने का तात्पर्य

नागार्जुन की एक छोटी-सी कविता है अकाल और उसके बाद । इस कविता के पहले बंद की चार पंक्तियों में अकाल की भीषणता का वर्णन और दूसरे बंद के चार पंक्तियों में अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन करते हैं । बहुत दिनों तक पडे रहे लंबे अकाल के वर्णन करने केलिए कवि कई दिनों तक कई बार दोहराते हैं । इसी प्रकार कई दिनों के अकाल के दुख के बाद फिर आई खुशी का वर्णन करने केलिए कई दिनों के बाद का प्रयोग कवि दोहराते हैं । घर में कई दिनों तक खाने के अभाव में मनुष्य ही नहीं सभी निर्जीव वस्तुएँ बहुत विवश होते हैं । अकाल के बाद घर के भीतर दाना आने पर मनुष्य ही नहीं सभी जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं में खुशी का अनुभव होते हैं । कई दिनों तक शब्द वस्तुओं की चेतनहीन हालत और कई दिनों के बाद शब्द चेतनयुक्त हालत सूचित करता है । कई दिनों तक ज़ारी रहा दुख कई दिनों के बाद खुशी में बदल गया । कई दिनों के दुख के बाद की खुशी हमें समझाने केलिए कवि ने ऐसा प्रयोग किया है । सुख और दुख मानव जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू हैं ।